

नन्ही लाल टोपी

किसी समय की बात है, एक नन्ही लड़की थी। उसकी नानी ने उसे एक प्यारी-सी लाल टोपी दी थी जो उसे बेहद पसंद थी। सदा उस टोपी को पहने रहने के कारण उसका नाम ही 'नन्ही लाल टोपी' पड़ गया था।

एक दिन उसकी माँ ने उसे बुलाया और कहा, “नन्ही लाल टोपी इधर आओ। नानी अस्वस्थ हैं। उन्हें जाकर यह कुछ सामान दे आओ। उन्हें अच्छा लगेगा। पर हाँ, ध्यान से जाना और सही रास्ते से जाना वरना कहीं गिरी तो सारा सामान भी गिर जाएगा और नानी तक कुछ भी नहीं पहुँचेगा। ढंग से रहना और नानी से मिलो तो उनका अभिवादन करना मत भूलना।”

“ठीक है माँ, मैं तुम्हारी हर बात मानूँगी” नन्ही लाल टोपी ने कहा।

नानी का घर जंगल में था। रास्ते में उसकी मुलाकात एक भेड़िए से हुई। उसे भेड़िए



की धूर्तता का पता नहीं था क्योंकि उसने कभी भेड़िया देखा ही नहीं था। उसे ज़रा भी भय नहीं लगा।

भेड़िए ने कहा, “नमस्कार, नन्ही लाल टोपी... तुम कहाँ जा रही हो?”

नन्ही लाल टोपी ने कहा, “आपको भी नमस्कार है। मैं अपनी नानी से मिलने जा रही हूँ...” यह कहकर वह आगे बढ़ गई।

भेड़िए ने पुनः पूछा, “तुम उस टोकरी में क्या ले जा रही हो?”

नन्ही लाल टोपी ने उत्तर दिया, “मेरी नानी बीमार है। उसके लिए थोड़ा शर्बत और केक ले जा रही हूँ जिससे उसे स्वास्थ्य लाभ हो। हम लोगों ने कल ही बनाया था, एकदम ताजे हैं।”

भेड़िए ने फिर पूछा, “तुम्हारी नानी कहाँ रहती हैं?”

“घने जंगल के भीतर, तीन बड़े देवदार के वृक्षों के नीचे उनका छोटा-सा घर है। उसके चारों ओर करौंदे की झाड़ियाँ हैं। तुम तो उस स्थान को जानते ही होगे...” नन्ही लाल टोपी ने कहा।

नन्ही लाल टोपी को अपना भोजन बनाने के इरादे से भेड़िया उसके पीछे-पीछे चलने लगा। नन्ही लाल टोपी का ध्यान भटकाने के लिए उसने कहा, “इधर देखो, नन्ही लाल टोपी... कितने सुंदर फूल हैं... तुम्हें अपनी नानी के

लिए कुछ फूल लेकर जाना चाहिए... इसकी सुगंध उन्हें अवश्य स्वस्थ कर देगी।”

नन्ही लाल टोपी ने भेड़िए की बात मान ली और नानी के लिए थोड़े फूल तोड़ लिए। अचानक भेड़िए ने उसे पकड़ने की चेष्टा की पर नन्ही लाल टोपी उसकी चाल समझ गई और भाग खड़ी हुई।

भेड़िए ने सोचा कि वह पहले नानी के घर पहुँचकर दोनों को खा लेगा। पर नन्ही लाल टोपी भेड़िए से पहले ही वहाँ पहुँच गई थी। उसने नानी को सारी बातें बता दी।

नानी ने कहा, “मेरी बच्ची! तुम चिंता मत करो। हम लोग दरवाजा बंद कर कुंडी लगा देते हैं... वह भीतर नहीं आ पाएगा।”

थोड़ी ही देर में भेड़िए ने दरवाजे पर दस्तक दी और बोला, “नानी, दरवाजा खोलो। देखो मैं तुम्हारे लिए क्या उपहार लाया हूँ...”

दोनों बिल्कुल शांत रहीं और उन्होंने दरवाजा नहीं खोला। घर के भीतर जाने का रास्ता ढूँढने के लिए धूर्त भेड़िए ने घर के दो चक्कर लगाए। कोई रास्ता नहीं मिलने पर वह छत पर जाकर छिप गया और नन्ही लाल टोपी के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा जिससे अंधेरा होने पर उसे खा सके।

थोड़ी देर बाद नन्ही लाल टोपी और नानी को लगा कि भेड़िया चला गया है। नन्ही लाल टोपी वापस घर जा

सकती है। घर के बाहर ही एक बड़ा नाद पानी से भरा हुआ रखा था। नन्ही लाल टोपी को विदा करने नानी जब बाहर आई तो उन्हें छत पर छिपे भेड़िए की परछाई नाद में दिखाई दी। नानी भेड़िए की चालाकी समझ गई। भेड़िए को सबक सिखाने का निश्चय कर नानी ने जोर से नन्ही लाल टोपी से कहा, “जाने से पहले वह बाल्टी मुझे लाकर दे दो। कल मैंने कुछ मांस पकाए थे वे बाल्टी में रखे हैं उन्हें नाद में डाल देने से वे ताजे बने रहेंगे।”

नन्ही लाल टोपी ने नाद में मांस के टुकड़े और गरम पानी लाकर डाल दिया। नाद पूरा भर गया। भेड़िया भूखा तो था ही। मांस की खुशबू से उसके मुँह में पानी आने लगा।

लालची भेड़िया अपनी गर्दन बढ़ाकर सूँघने तथा नीचे झाँकने की चेष्टा करने लगा। उसका संतुलन बिगड़ा और फिसलकर वह नाद में गिरकर डूब गया।

नानी ने नाद को मिट्टी से भर दिया। भेड़िया उसी में दफन हो गया। नानी ने निर्भय होकर नन्ही लाल टोपी को विदा किया और नन्ही लाल टोपी खुशी-खुशी उछलती-कूदती घर को चल दी।

